आए दीप गुजरात से, श्री राज भये फारक ।
माया पूरी दिखाय के, नजर करी तरफ हक ॥६९॥

अब आप श्री जी माया से पल्ला छुड़ाकर दीपबन्दर पहुंचे । श्री राज जी ने श्री इन्द्रावती जी को इस प्रकार की पूरी माया दिखाकर अपने चरणों में सुन्दरसाथ की सेवा के लिए लगाया ।

महामति कहे ब्रह्मसृष्ट को, माया में खेल की कही ।
अब आगे की कहों, ए जो बीतक भई ॥७०॥

अब आप धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी अपनी ब्रह्मसृष्टियों को कहते हैं कि श्री राज जी महाराज ने मेरी आत्मा श्री इन्द्रावती जी को माया में जो खेल दिखाया, उसकी यह बीतक है । इसके आगे जो बीतक हुई, उसे मैं अब सुनाता हूं ।

(प्रकरण १८, चौपाई ८६२)

तीन सृष्ट कही वेद ने, तीनों कही फिरकान ।
और तीनों बानी साधों में, तामें सैयों में पहिचान ॥१॥

जीवसृष्टि, ईश्वरी सृष्टि और ब्रह्मसृष्टि इन तीन सृष्टियों का वर्णन हिन्दुओं के शास्त्रों में है तथा आम, खास और खासलखास इन तीनों का वर्णन कुरान में भी आया है और तीनों का ही वर्णन बड़े-बड़े संतों की वाणी में भी आया है जैसे- जीव, हंस और परमहंस । इन सबमें ब्रह्मसृष्टियों की पहचान कही है ।

एक जीव ईस्वरी ब्रह्म की, तीनों के जुदे जुदे मुकाम ।
आम खास खासल खास, कही बीच निजधाम ॥२॥

जीव, ईश्वरी और ब्रह्म सृष्टि इन तीनों के अलग-२ स्थान कहे हैं । आम खलक, जिसे जीव सृष्टि कहा है, उसका धाम वैकुण्ठ है और खास जिसे ईश्वरी सृष्टि कहा जाता है, जिनका स्थान अक्षर का सत्स्वरूप कहा गया है और तीसरी जो खासल खास ब्रह्मसृष्टि है, उसका स्थान परमधाम है ।

सृष्ट ब्रह्म की साथ है, जाए महंमद दिया पैगाम ।
ल्याए कुंजी ईसा रूहअल्ला, दई सो हाथ ईमाम ॥३॥

ब्रह्मसृष्टि सर्वदा ही पारब्रह्म के साथ रहती है जिसके वास्ते मुहम्मद साहब पैगाम लेकर आए तथा इनके वास्ते ही ईसा रूह अल्लाह श्यामा महारानी संसार के सब ग्रन्थों के भेद खोलने के लिए जाग्रत बुद्धि का ज्ञान तारतम कुंजी लेकर आए हैं और लाकर वे इमाम मेहंदी श्री प्राणनाथ जी को दे दिया ।

Nijanand App

करे विजयाभिनन्दन जाहिर, बुध जाग्रत अवतार ।
कलंक मेट नेहेकलंक करें, अखण्ड किया संसार ॥४॥

विजियाभिनन्द बुद्ध निष्कलंक अवतार आखरूल जमां ईमाम मेहंदी स्वामी श्री प्राणनाथ जी अब जाग्रत बुद्धि के ज्ञान से, संसार के सब ग्रन्थों के भेद खोलकर, जो संसार अक्षर और अक्षरातीत तथा परमधाम की लीलाओं को नही जानता था । उसे जाहिर करके सबको अखण्ड मुक्ति प्रदान करेंगे ।

एक साहिब वेद कतेब में, सब तिनकी लिखी मजकूर ।
जो साहिदी नेक हुकमें, जाहिर किया नूर ॥५॥

हिन्दु शास्त्रों तथा कुरान पक्ष की किताबों में एक ही पारब्रह्म का वर्णन आया है । अब श्री प्राणनाथ जी ने सभी ग्रन्थों का एकीकरण कर, उनकी गवाहियों से एक ही पूर्ण ब्रह्म की पहचान को जाहिर किया।

हकें भेजा मोमिनों पर, पैगम्बर जो आखरी ।
सो लिखी हकीकत कुरान में, ब्रह्मसृष्ट दिलधरी ॥६॥

आप हक श्री राजजी महाराज ने अपनी ब्रह्मसृष्टियों के वास्ते मुहम्मद साहिब को आखिरी पैगम्बर के रूप में भेजा है जिसने परमधाम तथा अल्लाह तआला पारब्रह्म की कुल हकीकत लिखी है ।

उनों आगूं लिया दिल में, आवें रूहें बीच इन्सान ।
ए खेल किया इनों वास्ते, जाने इनको आवे ईमान ॥७॥

आप हक श्री राज जी महाराज ने अपनी रूहों को माया का खेल दिखाने के लिए भेजने को मन में लिया था । तब इनके वास्ते ही यह खेल बनाया । ताकि ये जब खेल में आए तो पुराण और कुरान की गवाहियों से मेरी और परमधाम की पहचान हो जाए -

प्रमाण : जा कारन माया रची, सास्त्र भी ता कारन ।
खेल भी एही देखहीं, और अर्थ भी लिये इन ॥

(किरंतन, प्रकरण-५२, चौपाई-६)

महम्मद हक के नूर से, भई दुनिया महम्मद के नूर ।
चाहे कायम तिन को करें, ईमान बका मजकूर ॥८॥

रसूल महंमद साहिब भी श्री राज जी महाराज के अंग का नूर है तथा दुनियां महंमद के नूर से बनी है । सारी दुनियां को आखिरी नूरी महंमद के रूप में स्वामी श्री प्राणनाथ जी महाराज, अक्षरातीत पारब्रह्म और उसके परमधाम पर यकीन दिला कर अखंड करेंगे ।

Nijanand App

पैगम्बर का माजजा, देवें सबों ईमान ।
एक दीन दुनी कर, किये जाहिर सातों निसान ॥९॥

आखिरी पैगम्बर स्वामी श्री प्राणनाथ जी का यही चमत्कार होगा कि आज दिन तक जो कोई भी पैगम्बर या अवतार सारी दुनियां को एक रस नही कर सका । आप श्री प्राणनाथ जी सारी दुनियां को एक रस करके कुरान के सातों निशान को जाहिर करेंगे ।

रूह अल्ला की आवसी, खोलने बका द्वार ।
अन्त सदी दसमीय के, सब होय बारहीं कार गुजार ॥१०॥

दसवीं सदी के अन्त में ९९० साल और ९ माह के बीतने पर रूह अल्लाह श्यामा महारानी आयेंगी और सारी दुनियां के लिये जागृत बुद्धि से अखण्ड धाम के द्वार खोल देंगी । बारहवीं सदी में इमाम मेंहदी साहिब के अन्दर बैठ कर वे परमधाम का ज्ञान तथा अक्षरातीत को श्री कुलजम स्वरूप की वाणी के रूप में जाहिर कर देंगी और सारी दुनियां को अखंड मुक्ति देंगे ।

प्रमाण : दसहीं ईसा अग्यारहीं इमाम, बारहीं सदी फजर तमाम ।
ए लिख्या बीच सिपारे आम, तीसमां सिपारा जाको नाम ॥

बड़ा क्यामतनामा प्रकरण १ चौपाई १३

मिलावा रूहन का, कहे गाजियों मिसल सोइ ।
होवे खिलवत खाना जाहिर, बका पहिचान सबों होइ ॥११॥

बारह हजार ब्रह्मसृष्टियों को कुरान में खुदा के नाम पर कुर्बान होने वाले मर्दों की जमात लिखा है। उनके वास्ते अर्स तथा खिलवत खाना जाहिर होगा जिससे उनको तथा सारी दुनियां को पूर्ण ब्रह्म तथा परमधाम की पहचान हो जायेगी ।

ईस्वरी सृष्ट फिरस्ते कहे, सो पहुंचे नूर मकान ।
और सृष्ट जीव की आम जो, पावें आठों भिस्त निदान ॥१२॥

ईश्वरी सृष्टि जिसे फरिस्ते कहा गया है । वे अक्षर ब्रह्म के सत्स्वरूप में पहुंचेगी तथा जीव सृष्टि को योगमाया की आठ भिस्तों में अखण्ड मुक्ति मिलेगी ।

मोमिन अरस अजीम के, बैठे खेल देखत ।
मायने खोल जाहिर किये, एही बखत क्यामत ॥१३॥

मोमिन, जिनकी परआतम परमधाम में बैठी है वे वहीं से बैठे हुए खेल देख रहे हैं । इनके वास्ते ही सब ग्रन्थों के छिपे भेदों को जाहिर करने के समय को कयामत का समय कहा है ।

Nijanand App

एही साइत हजूर की, तहां बेर नहीं लगार ।
चार घड़ी दिन पीछला, ए जाने परवरदिगार ॥१४॥

परमधाम में तो अभी एक पल भी नही हुआ है । वही चार घड़ी पीछला दिन ज्यों का त्यों है कि सारी ब्रह्मसृष्टियां खेल देखकर तथा सारे ब्रह्मांड को मुक्ति देकर परमधाम पहुंचेगी । तब भी वहां वही साइत और वही पल होगा । इस साइत के सब भेद अक्षरातीत श्री राज जी महाराज ही जानते है ।

महामति कहे ऐ मोमिनों, ए बेवरा तीनों का कहूया तुम ।
कहूं आगे और मजल की, जो दिखाया खेल हुकम ॥ १५॥

अब आप हक श्री प्राणनाथ जी महाराज फरमाते है कि तीनों सृष्टियों का बेवरा आपके सामने कहा है । अब इस खेल में श्री राज जी महाराज ने जुदा जुदा मंजिल में क्या क्या खेल दिखाया है उसके बारे में कहता हूं ।

(प्रकरण १९ चौपाई ८७७)

फेर कहों श्री जीय की, जो बीतक बीच इसलाम ।
लड़ाई करी दज्जाल सों, सो कहों मुकाम और ठाम ॥१॥

अब फिर श्री जी साहिब जी की बीतक जो श्री निजानन्द सम्प्रदाय को जाहिर करने में बीती और कैसे माया ने उसमें रूकावटें डाली, किस किस प्रदेश में और कहां २ क्या हुआ, वह मैं कहता हूं ।

जब जाम वजीर बिदा दई, देख कसाला दुख ।
हुआ हुकम हक सुभान का, अब ए पावें सुख ॥२॥

गुजरात से फांसी रूपी घोर दुःख को दिखा कर श्री राज का हुकम उन्हें अखंड सुख देने के लिये हुआ और वे दीप बन्दर पहुंचे ।

तब गुजरात से आये दीप में, भाई साथी जयराम के घर ।
उठ मिले आनन्द सो, बड़ो सुख पायो देखकर ॥३॥

तब गुजरात से चलकर दीपबन्दर में भाई जयराम कंसारा के घर पहुंचे । जयराम भाई उन्हें देख कर बड़े आनन्द के साथ उठकर मिले तथा आदर सत्कार किया ।

लगा खेम कुसल पूछने, कहां से पधारे श्री मेहेराज ।
हमसों कहो हकीकत, इत पधारे कौन काज ॥४॥

जयराम भाई ने श्री मेहेराज ठाकुर से सब कुशल क्षेम पूछा कि आप कहां से आए है तथा यहां किस काम के लिये आये हैं । इसकी हकीकत बताइये ।

Nijanand App